Q1) बार्टलेट के विचारों कि विवेचना करें?

A) स्मरण के क्षेत्र में सर्वप्रथम वैज्ञानिक अध्ययन Ebbinghas (एबिंगहास) ने निरर्थक पदों के आधार पर किया और बताया कि स्मरण एक पुनरुत्पादक क्रिया है। जिसमें सीखे गए विषय का प्रत्याह्वान वैसा ही होता है जैसा सीखा गया है। उसके रूप में किसी तरह का परिवर्तन नहीं होता है। कोई पद मौलिक पद से जरा सा भी भिन्न होने पर उसे विस्मरण की श्रेणी में रख दिया जाता था।

प्रारंभ में Ebbinghas के विचारों को काफी मान्यता मिली परंतु बाद में चलकर जोरदार विरोध हुआ। Bartlett (बार्टलेट) ने Ebbinghas के विचारों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और कहा कि स्मरण पुनरुत्पादक नहीं बल्कि रचनात्मक प्रक्रिया है। निरर्थक पदों का हमारे जीवन में कोई महत्व नहीं होता। दैनिक जीवन की सामग्रीयों के शिक्षण में उनके द्वारा अपनाई गई विधी वास्तविकता से काफी दूर है।

उपर्युक्त त्रुटियों को ध्यान में रखते हुए Bartlett ने स्मरण के ~~स्मरण~~ रचनात्मक दृष्टिकोण को जन्म

दिया। Bartlett के अनुसार, "व्यक्ति का स्मरण उसके संपूर्ण व्यक्तित्व, उसके संवेग, उसकी मनोवृत्ति एवं सांस्कृतिक आदि से निर्धारित होता है।" इनका मानना है कि हम जो कुछ स्मरण करते हैं उसका प्रत्याह्वान करते समय विषय में कुछ परिवर्तन हो जाता है। प्रत्याह्वान करते समय विषय के स्वरूप में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन होते हैं। कभी तो विषय के कुछ अंश को काट देते हैं, तो कभी अपनी तरफ से जोड़ देते हैं। Bartlett ने इस संबंध में बहुत ~~सारे~~ सारे प्रयोग किया। उन्होंने विषय के रूप में कहानी, तस्वीर आदी का इस्तेमाल किया। Bartlett ने अपना प्रयोग तीन विधियों से किया — क्रमिक पुनरुत्पादन विधि, उत्तरोत्तर पुनरुत्पादन विधि तथा एकांकी पुनरुत्पादन विधि।

क्रमिक पुनरुत्पादन विधि में एक प्रयोज्य को कहानी सुनाई गई। उसने उसी कहानी को दूसरे व्यक्ति के सामने कहा। दूसरे ने तीसरे के सामने। इसी क्रम में अनेक प्रयोज्यों को कहानियाँ सुनाई गई तो

पाया गया कि विभिन्न प्रयोज्यों ने एक ही कहानी का प्रत्यावर्तीत रूप में प्रत्याह्वान किया। उसके गुण तथा मात्रा दोनों बदल गये थे।

इसके उपरांत पुनरुत्पादन विधि में एक प्रयोज्य को कहानी सुनाई गई और उसका प्रत्याह्वान विभिन्न समय अंतरालों पर लिया गया तो पाया गया कि कहानी में परिवर्तन हो गया है।

एकांकी पुनरुत्पादन विधि में कई प्रयोज्यों को एक साथ कहानी सुनाई गई। फिर सभी का प्रत्याह्वान कराया गया, तो पाया गया कि प्रयोज्यों द्वारा कहानी में किस तरह प्रत्याह्वान में अंतर हो गया।

Bartlett ने दूसरा प्रयोग चित्रों के आधार पर किया और उसमें भी उन्हें वही परिणाम मिला। अपने इन प्रयोगों के आधार पर Bartlett ने पाया कि स्मरण सीखी गई विषय ~~स्मरण~~ का फोटो कॉपी नहीं बल्कि रचनात्मक होता है बहुत सारे व्याख्याओं को जाँचने के बाद Bartlett ने पुनरुत्पादन से कुछ सामान्य प्रवृत्तियों को परिभाषित

होने का उल्लेख किया है —
(i) कहानी का जो सामान्य रूप पहले पुनरुत्पादन में प्रकट होता है वह बाद के पुनरुत्पादन में भी बना रहता है। (ii) कहानी की कुछ प्रमुख बातें उस संगठन के केन्द्र का रूप ले लेती हैं और उसके आस पास उसकी बारीकियाँ भरी जाती हैं। (iii) व्यक्ति के निर्देश - तंत्र के अनुकूल अनेक प्रकार के आविष्कार किए जाते हैं और नयी बातें जोड़ी जाती हैं। और इन सबका परिणाम यह होता है कि विषय का जो रूप स्मरण में होता है, वह मौलिक विषय का meaningfull core होता है। जिस पर संवेगात्मक रंग चढ़ा हुआ होता है। इसी संवेगरंजित meaning full core के आधार पर एक उपयुक्त ढाँचे का पुनर्निर्माण होता है। जिसके कुछ अंश तथ्यात्मक होते हैं और कुछ आविष्कारित होते हैं।

Bartlett के विचार के अनुसार व्यक्ति जो कुछ भी प्रत्याह्वान करता है उसपर उसकी संस्कृति, मनोवृत्ति तथा आवश्यकताओं का प्रभाव देखा जाता है। जो चीजें व्यक्ति

की आवश्यकता, प्रेरणा, अभिरुची, एंव भाव के अनुकूल होते हैं। उनका प्रत्याह्वान करता है, तथा, जो उसके विपरीत होती है उन्हें वह छोड़ देता है। प्रत्याह्वान पर भी इनकी संस्कृति, संस्कार, सामाजिक मूल्य का भी खासा अंतर देखने को मिलता है।

Bartlett के दल के दूसरे मनोवैज्ञानिकों ने उसके विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि "सीखे गए विषय का प्रत्याह्वान करते समय उसमें सूक्ष्मीकरण, समीकरण एंव तीक्ष्णीकरण की प्रक्रिया होती है।

सूक्ष्मीकरण की प्रक्रिया द्वारा सीखा गया विषय प्रत्याह्वान करते समय छोटा हो जाता है, उसमें जो बातें महत्वपूर्ण होती हैं उसे ही धारण करता है। तीक्ष्णीकरण की प्रतिक्रिया में सीखे गए विषय का प्रत्याह्वान करते समय उसे प्रभावपूर्ण बनाने के लिए उसके साथ संवेगात्मक शब्दों को जोड़ा जाता है। उसी प्रकार समीकरण की प्रक्रिया में सीखे गए विषय के स्वरूप में परीवर्तन होता है। उसे और अधिक तर्कपूर्ण बनाकर प्रत्याह्वान करता है।